आध्यात्म सहनशक्ति, प्रेम, समायोजन और निर्णय की क्षमता जैसे मूल्यों को निखार कर विकास को गति देता है। आज संसार अति भौतिक विकास की राह पर चलकर तनाव, रोग और असमय मृत्यु का शिकार हो रहा है। शिक्षित डिग्रीधारकों की संख्या बढ़ रही है लेकिन मूल्यों और गुणवत्ता के अभाव में चारों तरफ समस्याएं भी उतनी ही तेजी से बढ़ रहीं हैं, सभ्य समाज में ईर्ष्या, वैर, क्रोध और प्रतिशोध की भावनाएं तेजी से सर उठा रहीं हैं ऐसे में मूल्याधारित शिक्षा की परम आवश्यकता है। मानव मंगल की ओर तथा मानवता जंगल की ओर जा रही है, बाहर की अपेक्षा भीतर को संवारना ज़रूरी है"- ये विचार थे प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय माउंटआबू से आई बहन उर्मिला जी के। वे अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ के तीनों संभागों के विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को अपने प्रेरणादायक वक्तव्य के माध्यम से संबोधित कर रही थीं। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ कृष्णकांत गुप्ता का मानना है कि मूल्यों के अभाव में शिक्षा निरर्थक है। अतः विद्यार्थियों के उचित मार्ग दर्शन के लिए ऐसे विचारकों की समय समय पर आवश्यकता रहती है। महाविद्यालय के सभागार में "शिक्षा में मूल्य" विषय पर उपयोगी वार्ता का आयोजन किया गया। सभागार में उपस्थित विद्यार्थियों और प्राध्यापकों ने सारगर्भित वक्तव्य अत्यंत ध्यानपूर्वक सुना व लाभान्वित हुए। वार्ता का उद्देश्य युवाओं में बढ़ती अधीरता, क्रोध व नकारात्मक विचारों के स्थान पर सकारात्मक विचारों व ऊर्जा को प्राथमिकता देना था। श्रेष्ठ विचार ही व्यक्तित्व के विकास में सहायक हैं और ऐसे प्रभावशाली व्यक्तित्व ही समाज व राष्ट्रनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।